॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य-प्रेरणा

(आर्यसमाज राजेन्द्र नगर का मासिक पत्र)

वर्ष-2, अंक-7, मास फरवरी 2023 विक्रमी संवत् 2079 दयानन्दाब्द 200 सृष्टि संवत् 1,96,08,53,123

कुल पृष्ठ 8 एक प्रति 5 रूपये वार्षिक शुल्क 50/- रूपये आजीवन 500/- रूपये

सम्पादक : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री www.aryasamajrajandernagar.org दूरभाष:- 011-40224701

आर्य समाज के प्रति श्रद्धा व निष्ठा रखने वाली

माता श्रीमती उमा बजाज जी पंचतत्व में विलीन

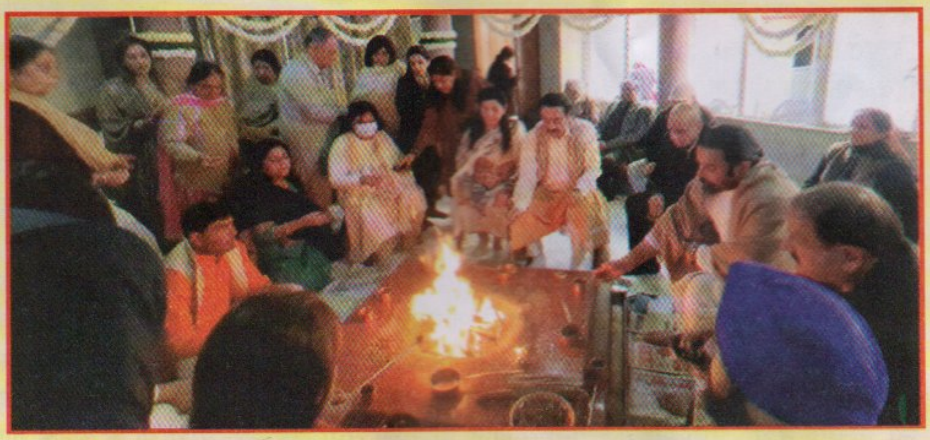

आर्य समाज को सर्वात्मना समर्पित, वेद, उपनिषद्, दान, यज्ञ के पूज्य माता श्रीमती उमा बजाज जी का गत् 24 जनवरी 2023 को निधन हो गया। इस दु:खद समाचार को सुनकर आर्य समाज के पदाधिकारी, विद्वान्जनों ने उनके अन्तिम दर्शनार्थ के लिए पहुँचे। माता जी का अन्तिम संस्कार वैदिक विद्वानों द्वारा वैदिक रीति से सम्पन्न किया गया। माता जी दिल्ली की सुप्रसिद्ध आर्य संस्था, आर्य समाज राजेन्द्र नगर के संस्थापक स्व. श्री द्वारकानाथ जी सहगल एवं माता श्रीमती वैष्णों जी की सुपुत्री आर्यनेत्री उमा बजाजा जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन तप, त्याग, दया और वात्सल्य की मूर्ति बनकर अपने सम्पूर्ण परिवार और समाज को ज्योतिर्मय बनाया। उनकी वाणी, उनका व्यवहार और उसके सत्कर्म ही उनकी

'आर्य-प्रेरण' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

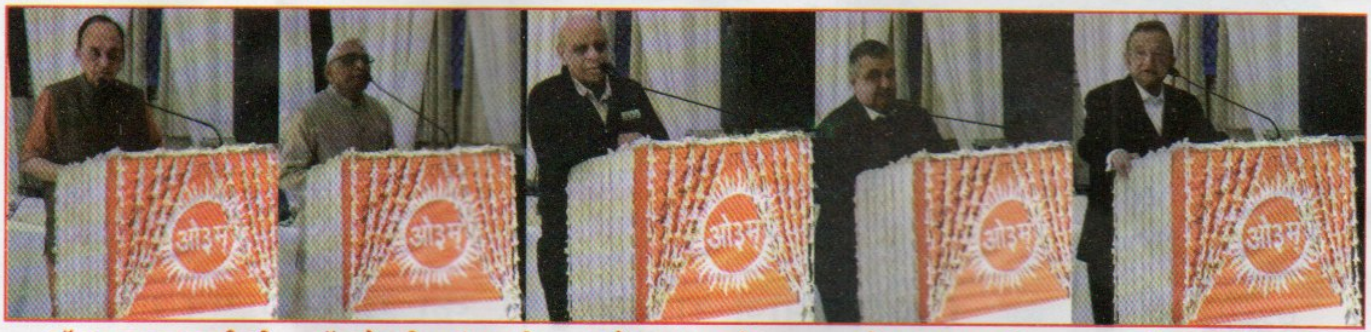

डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी जी डॉ. महेश विद्यालंकार जी अशोक सहगल जी जे.एन. चावला जी डॉ. सुभाष गोयल जी

पहचान थी। उन्होंने जो व्यहवार, गुण अपने माता-पिता से ग्रहण किये थे, वह आगे अपने सुपुत्र श्री राज बजाज, पुत्रवधू श्रीमती रानी बजाज, सुपत्री श्रीमती आनन्द जी, दमाद श्री अनिल सभरवाल, श्रीमती ज्योति जी, दमाद श्री विजय ढींगरा परिवारों में प्रज्जवलित किया।

प्रेरणा सभा- आर्य समाज राजेन्द्र नगर में दिनांक 27.01.2023 को शुक्रवार सायंकाल 3.5 बजे से शान्ति यज्ञ और प्रेरणा सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विभिन्न स्थानों से लोगों ने पहुँचकर यज्ञ को सफल बनाया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी के नेतृत्व में ब्रह्मचारियों ने वेद पाठ किया। तत्पश्चात् सभी ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रेरणा सभा का शुभारम्भ श्री अंकित उपाध्याय जी द्वारा मधुर संगीत से किया गया। पूर्व सांसद **डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी जी** ने श्रद्धांजलि अर्पित करने के पश्चात अपना उद्बोधन दिया कि भगवान का जो स्थान है, वही माँ का स्थान है। इसलिए भारत देश में माँ का महत्व अधिक है। आर्य समाज के गौरव एवं ख्याति प्राप्त विद्वान **डॉ. महेश विद्यालंकार जी** ने अपने प्रतिभाशाली व्याख्यान द्वारा स्व. उमा बजाज जी को दी गई श्रद्धांजलि उपस्थित जन समूह के लिए विशेष रूप से प्रेरणादायक रही। उन्होंने कहा कि शरीर खत्म हो जाता है, परन्तु चरित्र, व्यक्तित्व बचता है। वैदिक विद्वान् **आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी** ने अपने विचारों द्वारा माता जी को श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए कहा कि माता जी ने अपना जीवन यज्ञिक रूप से जीया। उनका आज का दिन हम प्रेरणा दिवस के रूप में मना रहे है। नये जन्म के लिए मृत्यु आवश्यक है। मृत्यु ही सत्य है। **अजय सभरवाल जी** ने अपनी नानी के पूर्व यादगारों को बताते हुए भावुक हृदय से अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की एवं **श्रीमती साक्षी खन्ना जी** ने अपने भजन के द्वारा (सबको जीना सिखाया है नानी) श्रद्धांजलि अर्पित की। **डॉ. सुभाष गोयल जी** ने श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए कहा कि उमा बजाज जी ने अपने सभी बच्चों को अच्छे संस्कार दिये है। वह उसी संस्कार से अपने जीवन को सफल बना रहे हैं। **श्री गुरुचरण सिंह राजु जी**, माता जी के व्यक्तित्व को स्मरण करते हुए उनके प्यार एवं स्नेह को स्मरण किया। मंच का संचालन कर रहे **श्री सुरेश चुघ** ने कहा कि उमा बजाज जी का जीवन सादगी, पवित्र एवम् याज्ञिक था। **आर्यसमाज के यशस्वी आर्यनेता श्री अशोल सहगल** अपनी बहन को स्मरण करते हुए उत्तराखण्ड बद्रीनाथ की घटना को बताते हुए कहा कि किस प्रकार उनकी गाड़ी पहाड़ी से एक खायी में गिर गयी थी और लोगों ने उनकी सहायता की और ईश्वर ने उनकी रक्षा की तथा **स्व. बद्रीनाथ जी** को भी याद किया तथा सम्पूर्ण परिवार ने उनकी सेवा की एवं इस प्रकार के बच्चे ईश्वर सबको प्रदान करे। इस प्रेरणा सभा में **डॉ. भारद्वाज पाण्डेय जी, आचार्य भगवान देव जी, आचार्य हरेन्द्र जी, देवेश प्रकाश आर्य जी, श्रीमती सुदेश आर्या जी, सुभाष दुआ, उमा अब्बी, बीना बजाज, सुशीला वर्मा** एवं आर्य संस्थाओं के अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

श्री गुरुचरण सिंह राजू जी आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी सुरेश चुघ जी श्रीमती शकुंतला कालरा जी श्रीमती साक्षी खन्ना जी श्री अजय सभरवाल जी

अपना सहयोग प्रदान करें।

आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली की गतिविधियों को सुचारु रूप से चलाने के लिए अपना सहयोग प्रदान करते रहें। आप अपना सहयोग क्रॉस चैक द्वारा आर्य समाज राजेन्द्र नगर के नाम से कार्यालय: आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली के पत्ते पर भिजवाये अथवा सीधा ऑनलाइन भी जमा कर सकते हैं। खाता संख्या-3075000100082363, IFSC-PUNB307500, पंजाब नेशनल बैंक। **-अशोक सहगल (प्रधान)**

सम्पादकीय

ज्योति पर्व

❑ आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, मो. 9810884124

वैदिक धर्म के अनुयायिओं और आर्य समाज के सन्दर्भ में 26 फरवरी और 1 मार्च तारीखें अपना विशेष महत्त्व रखती है। क्योंकि इन्हीं अवसरों पर इस पर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मदिवस तथा बोध दिवस शिवरात्रि समस्त आर्य सामाजिक जगत् धूम-धाम के साथ मनायी जा रही है। आधुनिक काल खण्ड में स्वामी दयानन्द का आविर्भाव संसार के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय है, जिसका समूचे विश्व पर अद्भुत प्रभाव पड़ा हैं। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक क्षेत्रों पर आज उनके द्वारा किये गये मानवता के प्रति लोगों का अनुकूल या प्रतिकूल जो भी मन्तव्य हो किन्तु यह एक सार्वजनीन सत्य है कि समूचे विश्व का कोई भी व्यक्ति उनकी उपेक्षा करने का दु:साहस नहीं कर सकता। अपनी सम्पूर्ण देवी शक्तियों के साथ संसार के हित के लिए सर्वथा समर्पित स्वामी जी महान् क्रान्तिकारी प्रवृत्ति के व्यक्तित्व थे। प्राचीन वैदिक संस्कृति के अनुसार सामाजिक का निवारण करके पुन: वैदिक धर्म की प्रतिष्ठा करना उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य था। वह परम आस्तिक, निर्भीकता के साथ सत्य का उपदेश करने वाले, स्वराज्य के प्रबल समर्थक, सामाजिक समरसता-समानता के पक्षधर, कोमल हृदय और दयालु प्रकृति के महान् आत्मा थे। विश्व के कल्याण के लिए उन्होंने आर्य समाज जैसी सुधारवादी संगठन की संस्थापना की और संसार का हित उसका मुख्य उद्देश्य बताया। ''संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।'' यह नियम बनाकर उन्होंने अपने समस्त अनुयायिओं तथा श्रेष्ठजनों को आर्य समाज के साथ मिलकर संसार की उन्नति के लिए कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की। उनके उपदेशों से पाखण्ड खण्ड-खण्ड हो गये। दुष्ट दुराचारियों की कूट-कापट्य पूर्ण किले की प्राचीरें ढह गई। उनके वेद भाष्य और वेदानुमोदित ग्रन्थों के प्रचार-प्रसार से देश-जाति में उत्साह की, उमंग की लहर व्याप्त हो गई उनकी कालजयी कृति ''सत्यार्थ प्रकाश'' ने परवर्ती वंश परम्परा को सद् विचारों का जिसके प्रयोग से राष्ट्र व धर्म के सेवी जनों ने जनता का मार्ग दर्शन किया। कविवर प्रकाश जी सत्यार्थ प्रकाश के और स्वामी जी के प्रभाव को रेखांकित करते हुए लिखते है:-

जैसे मृगझुण्ड देख
हरि को भाग जाता,
जैसे अन्धकार रविरश्मि
देख जाता है।
जैसे शुभ कर्म सेन पाप
कर्म रहें शेष,
सज्जनों का संग फल
उत्तम दिखता है।
पारस के स्पर्श से है
लोहा भी सुवर्ण बनता,
स्वाति बूंद सीपी में
मोती बन दिखाता है।
वैसे स्वामी दयानन्द
का सदुपदेश,
मानव मनों भ्रम
जाल को भागता है।

स्वामी जी के बोधदिवस और जन्म दिवस पर आर्यजन आत्म-चिन्तन करके उनके कार्य को और अधिक गतिमान करते हुए उनके ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम'' के संकल्प को पूर्णता तक पहुँचायें तभी इन पर्वों की सार्थकता है।

नेता जी असली महानायक है

रविवार 23 जनवरी को सुभाषचन्द्र बोस की 127वीं जयन्ती के अवसर पर आर्य समाज मंदिर राजेन्द्र नगर द्वारा साप्ताहिक कार्यक्रम में उनकी स्मृति में यज्ञ कार्यक्रम हुआ। आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी ने इस अवसर पर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस पर भारतीय राष्ट्रीयता के असली महानायक है। उन्होंने अपने वक्तव्य में राष्ट्रवाद, राष्ट्रीयता तथा राष्ट्रीय आचरण जैसे व्यापक विषय को राष्ट्र के प्रति पूर्ण रूपेण समर्पित नेता जी भारतीय संस्कृति के पक्षधर और आदर्शों तथा मान्यताओं को जीवन में उतारते थे। सुभाष जी एक महान राष्ट्र भक्त, महानायक के रूप में लाखों नौजवानों के प्रेरणास्रोत बने रहेगें। देश का युवा हमेशा अपने संकीर्ण स्वार्थ से ऊपर उठकर राष्ट्रहित में पूर्ण रूपेण समर्पित हो सकता है।

स्वामी दयानन्द और देशभक्ति

❑ स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती

आज का संसार महर्षि दयानन्द को एक धर्मप्रचारक और समाज सुधारक के रूप में ही जानता और मानता है। बहुत कम लोग ऐसे हैं जो उनकी राष्ट्रीयता अथवा देशभक्ति से परिचित हैं। कितने लोग ऐसे हैं जो यह जानते हैं कि एक बार एक अंग्रेज कलक्टर ने स्वामीजी का भाषण सुनने के बाद कहा था कि यदि आपके भाषण पर लोग चलने लग जायें तो इसका परिणाम यह होगा कि हमें अपना बंधना-बोरिया बांधना पड़ेगा। 1911 की जनसंख्या के अध्यक्ष श्री ब्लण्ट ने आर्यसमाज की आलोचना करते हुए लिखा था-

The Arya Samajic Doctrine has a Patriotic side- The Arya Doctrine and Arya Education a like sing the glories of Ancient India and by so doing rouse a feeling of national pride in its disciples who are made to feel that their country's history is not a tale of humiliation- Patriotism and politics are not synonymous but the Arousing of an interest in national affaris as a national result of arousing national pride- (Census Report of 1911, Vol- XV, Part & I, Chapter IV- Page 135)

आर्यसमाज के सिद्धान्तों में स्वदेश प्रेम की प्रेरणा है। आर्य सिद्धान्त और आर्य शिक्षा दोनों समान रूप से भारत के प्राचीन गौरव के गीत गाते हैं और ऐसा करके अपने अनुयायियों में राष्ट्रीय गौरव की भावना को जागृत करते हैं। इस शिक्षा के कारण ही वे समझते हैं कि हमारे देश का इतिहास पराभव की कहानी नहीं है। देशभक्ति और राजनीति पर्यायवाची शब्द नहीं हैं किन्तु राष्ट्रीय कार्यों में प्रवृत्ति का होना राष्ट्रीय भावना का स्वाभाविक परिणाम है। मिस्टर ब्लण्ट के कथन की यथार्थता को जानने के लिए महर्षि के इन शब्दों पर ध्यान देना काफी है-'यह आर्यावर्त्त देश ऐसा है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा देश नहीं इसीलिए इस भूमि का नाम सुवर्ण भूमि है। क्योंकि यही सुवर्ण आदि रत्नों को उत्पन्न करती है। जितने भूगोल में देश हैं वे सब इसी देश की प्रशंसा करते और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है, वह बात तो झूठी है, परन्तु आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणि है जिसको लोहे रूपी विदेशी छूते ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ् हो जाते हैं। सृष्टि से लेकर पांच सहस्र वर्षों से पूर्व पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि एकमात्र राज्य था। अन्य देश में माण्डलिक अर्थात् छोटे-छोटे राजा रहते थे। वास्तव में ऋषि दयानन्द अपने देशवासियों में यह भावना भरना चाहते थे कि तुम्हारा अतीत अत्यन्त गौरवपूर्ण था। मिस्टर ब्लण्ट के कथनानुसार इस भावना के जागृत होने का अनिवार्य परिणाम यही है कि लोगों में अपने खोए हुए वैभव को फिर से पाने की लालसा पैदा हो। हुआ भी वही। लोगों में अपनी गुलामी के प्रति घृणा और स्वतन्त्र होने की इच्छा को प्रोत्साहन मिला। किसी भी मामले में विदेशियों के सामने सिर झुकाना ऋषि को सह्य नहीं था। वे लिखते हैं कि 'जब अपने देश में सब सत्य विद्या, धर्म, ठीक-ठीक सुधार और परमयोग की सब बातें थी और अब भी हैं तब विचारिये कि थियोसोफिस्टों को एक एतद्देशवासियों के मत में मिलना चाहिए या आर्यावृतियों को थियोसोफिस्ट होना चाहिए। ऋषि के स्वदेश प्रेम के सामने फ्रांस, अमेरिका और स्विट्जरलैंड से प्रेरणा पाने वाले, वर्तमान भारतीय देशभक्तों की राष्ट्रीयता कितनी फीकी है? वास्तव में स्वदेशी भाषा, भाव, साहित्य के प्रेम के बिना स्वदेश प्रेम बिलकुल थोथा और निर्जीव है। मिस्टर ब्लण्ट ने आगे लिखा है- Dayanand was not merely a religious reformer, he was also a great patroit- It would be fair to say that with him religious reform was a mere means to national reform-

'दयानन्द केवल धार्मिक सुधारक ही नहीं थे। वे बहुत बड़े देशभक्त भी थे। यह कहना ठीक ही होगा कि उन्होंने धार्मिक सुधार को राष्ट्रीय सुधार के साधनरूप में ही अपनाया था।' मिस्टर ब्लण्ट ने बहुत ही पते की बात कही है। इसमें सन्देह नहीं कि ऋषि दयानन्द ने पाखण्डों और परस्पर विरोधी सिद्धान्तों का खण्डन इसीलिए किया कि इनके रहते हुए 'परस्पर एकमत, एकता, मेल मिलाप या सद्भाव न रहकर इर्ष्या, द्वेष, विरोध, मतभेद और लड़ाई झगड़ा' ही होगा। ऋषि ने बड़े दु:ख के साथ लिखा कि 'यदि ऐसे पाखण्ड न चलते तो आर्यावर्त की दुर्दशा क्यों होती?' उन्होंने सबसे अधिक खण्डन मूर्तिपूजा का किया है। इस प्रकरण में उन्होंने 16 युक्तियां दी हैं जिनमें से अधिकांश का आधार मूर्ति पूजा के कारण देश को होने वाली हानियां हैं। उन्होंने लिखा है-'नाना प्रकार की विरुद्ध स्वरूप नाम चरित्र युक्त मूर्तियों के पुजारियों का ऐक्यमत नष्ट होने के विरुद्ध मत में चलकर आपस में फूट बढ़ाके देश का नाश करते हैं...मूर्ति के भरोसे शत्रु का पराजय होकर राज्य, स्वातन्त्रय और उनका सुख उनके शत्रुओं के स्वाधीन हो जाता है।' अनेक बार मूर्ति पूजा के कारण पराजित होने का उल्लेख करते हुए ऋषि लिखते हैं कि 'क्यों पत्थर की पूजा कर सत्यानाश को प्राप्त हुए? देखो, जितनी भी मूर्तियां हैं उनके स्थान पर शूरवीरों की पूजा करते तो भी कितनी रक्षा होती? जो एक शूरवीर पुरुष की मूर्ति के सदृश पूजा करते तो वह अपने सेवकों को यथाशक्ति बचाता और उन शत्रुओं को मारता।' इसके आगे उन्होंने मूर्ति पूजा के फलस्वरूप होने वाले अपव्यय, व्यभिचार, रोग, लड़ाई बखेड़े आदि के कारण होने वाली देश की हानि का उल्लेख किया है। हमारी जिन कमजोरियों से विदेशियों ने लाभ उठाया है उन्हें दूर करना ही ऋषि दयानन्द के खण्डनात्मक कार्य का ध्येय था। ब्राह्मसमाज के खण्डन के प्रकरण को देखने पर यह बात और भी स्पष्ट हो जाती है। ब्राह्मसमाज और प्रार्थनासमाज का इतना अधिक खण्डन ऋषि ने केवल उनके विदेशीपन के कारण ही किया प्रतीत होता है। वह लिखते हैं- 'इन लोगों में स्वदेशभक्ति बहुत न्यून है। ईसाइयों के आचरण बहुत से लिये हैं। अपने देश की प्रशंसा व पूर्वजों की बड़ाई करना तो दूर रहा, उसके स्थान में भरपेट लनदा करते हैं। ब्रह्मादि ऋषियों का नाम भी नहीं लेते प्रत्युत ऐसा कहते हैं कि बिना अंग्रेजों के सृष्टि में आज पर्यन्त कोई विद्वान् ही नहीं हुआ। आर्यावर्तीय लोग सदा से मूर्ख चले आये हैं। उनकी उन्नति कभी नहीं हुए।' उन लोगों की भर्त्सना करते हुए वे लिखते हैं कि 'भला जब आर्यावर्त में उत्पन्न हुए है और इसी का अन्न जल खाया पिया, अब भी खाते पीते हैं तब अपने माता पिता पितामह के मार्ग को छोड़कर दूसरे विदेशियों के मतों पर अधिक झुक जाना, ब्राह्मसमाजी और प्रार्थनासमाजियों का एतद्देशस्थ संस्कृत विद्या से रहित अपने को विद्वान् प्रकाशित करना, इंगलिश भाषा पढ़के पण्डिताभिमानी होकर झटिति एक मत चलाने में प्रवृत्त होना मनुष्यों का स्थिर और बुद्धिकारक काम क्योंकर हो सकता है? कितने स्वदेशाभिमानी थे ऋषि दयानन्द। यहां पर महर्षि ने ब्राह्मसमाजियों के विदेशी मत ईसाइयों की ओर झुकाव होने के कारण ही उन्हें इतना फटकारा है। शायद इस और ऐसी ही अन्य समीक्षाओं के कारण 1901 में जनसंख्या के अध्यक्ष मिस्टर बर्न ने लिखा था- Dayanand feared Islam and Christianity because he considered that the adoption and adaptation of any] foreign creed would endanger the national feelings he wished to foster-

(शेष पृष्ठ 6 पर)

MESSAGE OF GITA

❑ **Dr. Mahesh Vidyalankar**

Cotinue from last issue

Gita has laid stress on satvik (pure and good) food. Our sages and saints have shown particular awareness about food and devotional song. Food, in a way, is foundation of body and thoughts. If our food is impure, our body, mind, thoughts. If our food is impure, our body, mind, thought will degenerate accordingly. If our food is pure and good, our intellect will also be elevated. The food-habits of the people nowadays are not proper. That is the reason that the people`s mind, intellect, thinking and action are no decline and the tendency of highly improper feelings and action is on the rise. The tendency is a dreadful danger for the mankind. The virtuous human intellect must put an end to the evil spirits of violence, sinning, unrighteousness, falsehood, and corrupt practices. Otherwise the future will be dark and disastrous. In order to be saved from the coming danger, there is only one way out according to Gita, that a man should be a man is true sense of the word and there should prevail virtuous intellect-ideas-actions and human feelings among the people. That human beings should be full of humaneness, is possible by virtuous intellect only. Virtuous intellect leads to self-realisation. Self realisation clean the mind of ignorance, brightens the inner vision and consequently the man is able to free himself of distress, pain, problem and difficulties. It is the intellect which keeps the mind on the right track and leads him to the truth and righteousness. Lord Krishna says:

यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति।
तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च।।

" O man! you will attain vairagya from the worldly enjoyment that you know already and will come to know later, when your intellect will cross over the tide of confusion." When the mind is under control of the virtuous intellect, it is able to save itself from many a vice, sin and wrong. Gradually, the mind is headed for calmness. The intellect becomes steady and discerning. It keeps the man happy, calm and fulfilled. The soul is placed above the intellect. Awakening of soul keeps the intellect stead-fast and sincere. If the intellect is heading for the right path and virtuousness, elevation of soul is almost imminent. Virtuous intellect is a means to realisation of soul. The wise man hears the voice of soul. But the unwise, indulging in selfishness, greed and ignorance, tends to ignore the voice of soul. The results is that he leans towards sins, unrighteousness, injustice and falsehood. He is known as 'self-destroyer`s. The souls of self-destroying people go on wandering about in many a dark life-form for ages together. The wise is an awakened man and listens to voice of the soul. The soul warns us against sinning, practising falsehood and wrongdoing.

Gita transmits essence of true knowledge. Gita`s immortal message is:

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।

"Nothing in this world is more sacred than knowledge." We should allow our life being guided by the sincere intellect. Only sincere and virtuous intellect can get us true knowledge and make our life blissful, calm, and happy.

THE HUMAN LIFE PROCESS

Next to the immortality of soul, it is birth and death of the human beings which have been dealt with in detail in Gita. Human life is like a river, with birth and death forming its two shores. The death comes along with the birth. The moment a man is born, the death is the inevitable company. As the lightning is hidden in the cloud, so is death in life. One who is born, must die some day. One who has come into this world, must leave it one day. Birth and death are like two sides of a coin. As a body has two feet so has human life, the birth and the death, as its two feet.

Innumerable people in this world have benefitted from the life-giving energy released through the knowledge of Gita by Lord Krishna. Gita has almost changed the style of knowing, thinking and doing things of the world. Gita tells us how to live life meaningfully. Gita`s philosophy of life is practical. Gita answers many questions about life; some of these are: what is the significance of life; why have this been given to us; what are the duties and responsibilities of life; how to make this life beautiful, superior, pure and great? The life is like a journey. As different kinds of birds gather on a tree at the fall of night and fly away towards their destinations at the break of dawn, so do the people of different descriptions get together in course of journey of life and then separate when the departing moment arrives. The world is merely a halting place for the soul. The soul gets a human form after going through a number of births. After leaving this body, the soul doesn`t know as to which form of life it will enter into next, and where and with who as parents. The mystery remains unresolved till date. Kinship relations of the worldly life are unpredictable. They can be likened to the two wooden sticks getting together and then separating in the sea-waves perhaps never to be together again. The relations of kinship and pleasures of life are limited to this world.

According to Gita, human life is short. The people, having experienced the consequences of their past actions, must leave this world one day. Nobody can block this process. This has continued since the world came into existence. Coming and going constitute life process.

(पृष्ठ 4 का शेष)

'ऋषि दयानन्द को आशंका थी कि इस्लाम और ईसाइयत जैसे विदेशी मतों के अपनाने से देशवासियों की राष्ट्रीय भावनाओं को जिनको वह जागृत करना चाहते थे ठेस पहुंचेगी।' इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि हमारी दासता की कड़ियों को सुदृढ़ बनाने में ईसाइयत ने अंग्रेजों के कंधे से कंधा भिड़ाकर काम किया है। जब तक किसी देश के लोगों में स्वाभिमान की भावना रहती है तब तक विदेशी शासन चिरस्थायी नहीं हो पाता। इसी भावना को नष्ट करने के लिए ईसाइयत ने प्रयत्न किया और हिन्दुस्तानियों को जंगली और असभ्य बताकर उनमें हीनता की भावना को जागृत करना चाहा। उसी समय महर्षि दयानन्द ने अपने लेखों और वक्तव्यों से उनमें सर्वश्रेष्ठ होने की भावना पैदा की और इस प्रकार ईसाइयत के आक्रमण को किल कर दिया।

इस्लाम के इतिहास से तो सभी लोग भली प्रकार परिचित हैं। मुसलमान आक्रान्ता के रूप में इस देश में आये और लगभग 700 वर्ष तक उन्होंने यहां शासन भी किया। यह ठीक है कि भारत के करोड़ों मुसलमानों में अधिकांश इसी देश के रहने वाले हैं किन्तु उन्होंने कभी भी किसी मुसलमान शासक का (जो प्राय: सभी विदेशी रहे) उसके विदेशी होने के कारण विरोध नहीं किया। इतिहास इस बात का पूर्णतया साक्षी है कि मुसलमानों की यह मनोवृत्ति आज तक ज्यों की त्यों बनी हुई है। सच तो यह है कि कट्टर से कट्टर देशभक्त भी कलमा पढ़ते ही देशद्रोही बन जाता है। बड़े से बड़े राष्ट्रवादी मुसलमान के हृदय में भी जो आदरभाव विदेशी आक्रान्ता महमूद गजनवी और मुहम्मद गौरी के लिए है उसका शतांश भी देश के लिए मर मिटने वाले पृथ्वीराज चौहान और महाराणा प्रताप अथवा राम या कृष्ण के लिए नहीं है। भारत के मुसलमान यह जानते हुए भी उन्होंने स्वयं इस देश पर कभी राज्य नहीं किया विदेशी मुस्लिम शासकों पर गर्व करते हैं। जबकि कांग्रेस इस देशों के लोगों का शासन स्थापित करने के लिए संघर्ष करती रही। भारत के मुसलमान अपने खोये हुए वैभव मुगल राज्य को पुन: प्राप्त करने का प्रयत्न करते रहे। स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए जो कुछ किया हिन्दुओं ने किया। महर्षि दयानन्द इस तथ्य को पूरी तरह जानते थे। मुसलमानों को देशद्रोही से देशभक्त बनाने के लिए उन्होंने उनको हिन्दू बनाना आवश्यक समझा। यही उनके शुद्धि आन्दोलन का आधार था। ऋषि दयानन्द का शुद्धि आन्दोलन विशुद्ध राष्ट्रीय आन्दोलन था। उसमें मतान्धता क लेश भी न था।

महर्षि दयानन्द कौन थे

❑ एक ऐसे ब्रह्मास्त्र थे जिन्हें कोई भी पंडित, पादरी, मौलवी अधोरी, ओझा तान्त्रिका हरा नहीं पाया और न हो उनपर अपना कोई मन्त्र तन्त्र या किसी भी प्रकार का कोई प्रभाव छोड़ पाया। ❑ एक ऐसा वेद का ज्ञाता जिसने सम्पूर्ण भारत वर्ष में ही नहीं अपितुपूरी दुनिया में वेद का डंका बजाया था। ❑ एक ऐसा वेद का ज्ञाता जिसने सम्पूर्ण भारतवर्ष में ही नहीं अपितुपूरी दुनिया में वेद का डंका बजाया था। ❑ एक ऐसा महान् व्यक्ति जिसने लाखों की संपत्ति को ठोकर मार दी पर सत्य की राह से विचलित नहीं हुआ। ❑ एक ऐसा क्रान्तिकारी जिसने सबसे पहले आजादी का विगुल फूंक न जाने कितने लोगों के अन्दर क्रान्ति की भावना को पोषित किया। ❑ एक ऐसा स्वदेश भक्त जिसने सबसे पहले स्वदेशीय राज्य को सर्वोपरि कहा और अंग्रेजों के सामने ही उनका राज्य समस्त विश्व से नष्ट होने की बात कही एक ऐसा गौरक्षक व गौ प्रेमी जिसने सबसे पहले गौ रक्षा हेतु गौरक्षिणी सभा बनाई इसके नियमों का प्रतिपादन किया। ❑ एक ऐसा निडर व्यक्ति जिसने निर्भीक होकर समाज की कुप्रथाओं कुरीतियों पर प्रहार किया। ❑ एक ऐसा व्यक्ति जिसने कभी भी सत्य से समझौता नहीं किया। ❑ एक ऐसा धर्म धुरन्धरा जो केवल वेद का ही नहीं अपितु कुरान पुराण बाइबल अन्य मजहबों व मत मतान्तरों के ग्रन्थों का ज्ञान रखता था। ❑ एक ऐसा सत्य का पुजारी जो अपनी हर बात डंके की चोट पर कहता था। एक ऐसा धर्म धुरंधरा जिसने इस देश का ईसाइयत व इस्लामीकरण होने से केवल रोका ही नहीं वरन शुद्धि व घर वापसी द्वारा देश का उद्धार किया। ❑ एक ऐसा सत्यनिष्ठ जिसे किसी प्रकार के लोभ व लालच विचलित नहीं कर पाये। ❑ एक ऐसा संन्यासी जो पत्थरों जूतों की मार से विचलित न हुआ उसके संकल्प और भी मजबूत हुए। ❑ एक ऐसा ज्ञानी जिसने ऋषियों के नाम से बनाए सभी असत्य ग्रन्थों का भण्डा फोड़ा हमारे ऋषियों के नाम पर लगे दाग को मिटाया। ❑ एक ऐसा समाज सुधारक जिसने सबसे पहले सती प्रथा, बाल विवाह, जैसी कुप्रथाओं पर प्रहार कर समस्त भारत में नारी की प्रतिष्ठा को समाज में पुन: स्थापित कराया। ❑ एक ऐसा समाज सुधारक जिसने मांसाहार व शाकाहार में भेद स्पष्ट कर समाज को पुन: शाकाहार के रास्ते पर चलाया। ❑ एक ऐसा साहसी व्यक्ति जिसका साहस अपमान तिरस्कार से कम नहीं हुआ बल्कि और भी दृढ़ हुआ। ❑ एक ऐसा समाज सुधारक जिसने केवल भारत के लिए ही नहीं अपितु विश्व के कल्याण की भावना से नि:स्वार्थ काम किया।

हृदय रोग-1. तुलसी के बीज का चूर्ण मिश्री के साथ लेने से अथवा मेथी के काढ़े में शहद डालकर पीने से हृदय-रोग में लाभ होता है। 2. अर्जुन वृक्ष की छाल का चूर्ण एक चम्मच मात्रा में एक गिलास पानीमिश्रित दूध में उबालकर पीने से खूब लाभ होता है। इसके अलावा लहसून, आँवला, शहद, अदरक, किसमिस, अंगूर, अजवाईन, अनार आदि चीजें हृदय के लिए लाभदायी हैं। 3. नींबू के सवा तोला (करीब 15 ग्राम) रस में आवश्यकतानुसर मिश्री मिलाकर पीने से हृदय की धड़कनें सामान्य होती हैं तथा स्त्रियों की हिस्टिरिया के कारण बढ़ी हुई धड़कनें भी दो-तीन नींबू के रस को पानी में मिलाकर पीने से शांत होती है।

हमारे प्रेरणास्त्रोत

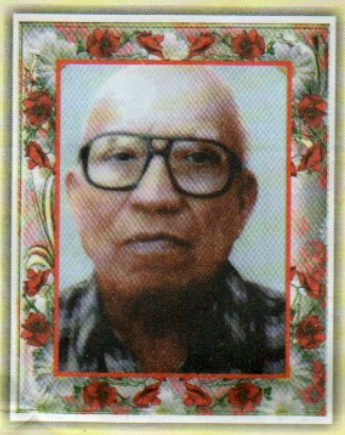

स्व. श्री द्वारकानाथ जी सहगल

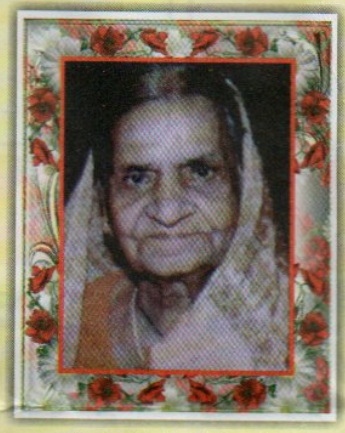

स्व. श्रीमती वैष्णो देवी जी सहगल

स्व. श्रीमती गुलशन मल्होत्रा जी

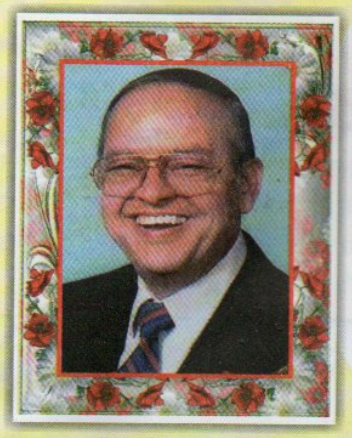

स्व. श्री बद्रीनाथ बजाज जी

स्व. श्रीमती उमा बजाज जी

स्व. श्रीमती सुषमा भसीन जी

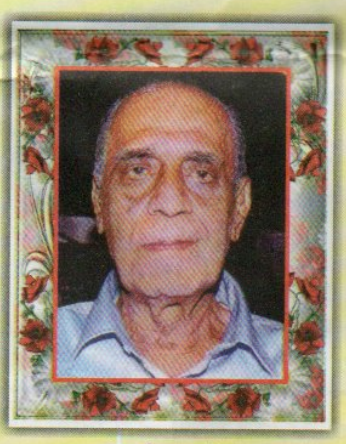

स्व. श्री सुरेन्द्र जी सहगल

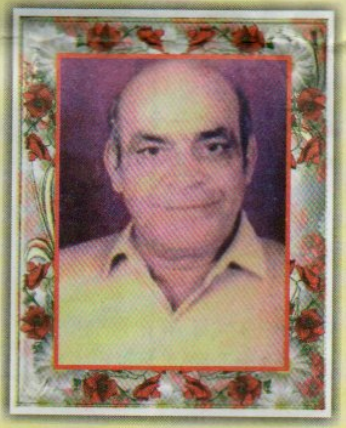

स्व. श्री सुभाष सहगल जी

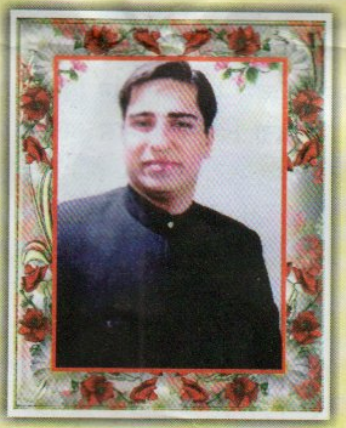

स्व. श्री विवेक सहगल जी

R.N.I.No. DEL BIL/2007/22120
Date of Publication 20-01-2023

Delhi Postal R.No. DL(C)-14/1431/2021-23
Posted at SRT Nagar PO, New Delhi-55
Posting Date: 7-8 Every Month

सेवा में,

आर्य प्रेरणा

फरवरी-2023

आर्य समाज के विभिन्न प्रकल्प

आर्य समाज ने मनाया मकर सक्रांति पर्व

आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली के तत्वावधान में लोहड़ी व मकर संक्रांति का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर वेद मन्त्रों के साथ यज्ञ किया गया तथा गुड़ तिल मेवा मिष्ठान आदि से आहुतियां दी गई, तथा राष्ट्र की समृद्धि तथा समाज की खुशहाली की कामना की गई। इस अवसर पर आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी ने कहा कि पर्व हमारी संस्कृति को जीवित रखते है। मकर संक्रांति के पुनीत अवसर पर वस्त्र तिल मूंगफली और मधुर मिष्ठान बांटने की हमारी परम्परा है जो निर्धन है सर्दी से ठिठुरे हुए है सूर्य उनको अधिक उष्णता देना प्रारम्भ करते हैं। इस अवसर पर समाज के प्रधान अशोक सहगल जी, सतीश मैहता जी, सतीश कुमार, गौरी शंकर धवन जी, विजय तनेजा, श्रीमती उमा अब्बी, शकुन्तला कालरा, ललिता कुमार, वीना बजाज ने समस्त देशवासियों को शुभकामनाएं दी।

आर्य समाज राजेन्द्र नगर में कंबल वितरण

आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली के परिसर में कंबल वितरण किये गये। आर्य समाज द्वारा समाज के उपेक्षित, असहाय, निर्धन स्त्री पुरुषों को कंबलो का वितरण किया। आर्य समाज के सदस्य हमेशा सामाजिक और धार्मिक कार्यों में अग्रणी रहते है। यदि आप समाज हेतु कुछ करना चाहते है तो किसी भी शुभ अवसर पर मन में ठान लीजिए और प्रारम्भ कर दीजिए। कंबल वितरण के अवसर आर्य समाज के अधिकारीगण एवं आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने याचकों को नित-नूतन उन्नति की ओर बढ़ने का आशीर्वाद प्रदान किया।

गणतन्त्र ही मन्त्र हमारा

सबके अधिकारों का रक्षक,
अपना ये गणतन्त्र पर्व है
लोकतन्त्र ही मन्त्र हमारा,
हम सबको ही इस पर गर्व है।

आर्य समाज राजेन्द्र (नई दिल्ली) में 26 जनवरी को 74वां गणतन्त्र दिवस का आयोजन किया गया। यह भारतीय संविधान का एक स्थापना दिवस है। इस अवसर अनेक महानुभावों ने कविता, भजन प्रस्तुत किये। ध्वाजारोहण के उपरान्त आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी का देशहित में ओजस्वी भाषण हुआ। भारत के उन सभी वीर जवानों के बलिदान की स्मरण करते हुए आर्यसमाज के प्रधान अशोक सहगल जी, सुरेश चुघ, सतीश कुमार, ललिता कुमार, नारायणी मलिक, गौरी शंकर धवन एवं भीष्म लाल जी व अधिकारीगण द्वारा यह गणतन्त्र का आयोजन सुसम्पन्न हुआ। - **विकास मैहता, मन्त्री**

आप बहुत याद आओगी

साक्षी खन्ना अपनी प्रिय नानी उमा बजाज जी के साथ

Printed and published by Mr. Narinder Mohan Walecha secretary on behalf of Arya Samaj, Rajinder Nagar and printed at Mayank Printers, 2199/63, Naiwala, Karol Bagh, New Delhi-110005 and published at Arya Samaj, Rajinder Nagar, New Delhi-110060. Editor: Aacharya Gavendra Shastri